

नामप्रथमः कादसमयः समाप्तः ॥ ५१ ॥ ॥ अथ १ वज्रगर्हना ॥ द ॥ य ॥ हु ॥ य ॥ थ ॥ ना ॥
 यी ॥ पु ॥ ति ॥ कु ॥ ल ॥ कु ॥ ने ॥ शु ॥ हे ॥ ॥ रु ॥ ग ॥ वा ॥ न ॥ व ॥ ज ॥ सा ॥ ग ॥ ता ॥ स ॥ र्व ॥ व ॥ ह ॥ क ॥ स ॥ ग ॥ ह ॥ हा ॥ मे ॥ क ॥ ला ॥ य ॥ थ ॥ पा ॥ र्क ॥ व ॥ र्ह ॥ यि ॥ ला ॥
 कु ॥ म ॥ लु ॥ ले ॥ ॥ पु ॥ दा ॥ ष ॥ से ॥ स् ॥ व ॥ य ॥ ति ॥ मो ॥ कृ ॥ ता ॥ धि ॥ वा ॥ स ॥ ना ॥ दि ॥ क ॥ ॥ ग ॥ ग ॥ न ॥ ल ॥ स ॥ र्व ॥ व ॥ ह ॥ य ॥ ति ॥ मी ॥ रु ॥ दि ॥ व ॥ स ॥ य ॥
 रु ॥ ग ॥ स ॥ व ॥ द ॥ व ॥ ता ॥ से ॥ या ॥ गो ॥ पु ॥ रु ॥ कु ॥ पा ॥ त्र ॥ ग ॥ ॥ औ ॥ व ॥ ज ॥ य ॥ धि ॥ ना ॥ ॥ है ॥ स्वा ॥ हा ॥ ॥ औ ॥ व ॥ ज ॥ य ॥ प ॥ ना ॥ ॥ है ॥ स्वा ॥ हा ॥ ॥
 औ ॥ व ॥ ज ॥ यो ॥ प ॥ ना ॥ ॥ है ॥ स्वा ॥ हा ॥ ॥ औ ॥ व ॥ ज ॥ नी ॥ र ॥ वा ॥ ना ॥ ॥ है ॥ स्वा ॥ हा ॥ ॥ औ ॥ व ॥ ज ॥ ने ॥ व ॥ य ॥ ना ॥ ॥ है ॥ स्वा ॥ हा ॥ ॥ ना ॥ ना ॥ है ॥ का ॥ व ॥ नि ॥ थ ॥

K.Y

3800

1848

॥ हव ॥

नास्य षाष्ट्यमुपेक्षा कथं ॥ नृपाद्यादिकं प्राच्य सर्ववत्तु विधिकं मे ॥ ३॥ नृपाद्यादिकं प्राच्य सर्ववत्तु विधिकं मे ॥ ३॥
सुतयोष्टिक प्रिकासीमान् सप्राकं गणाय सवसावयत् ॥ एकहस्तार्द्धहस्तैवाऽर्द्धाष्टिककम्ब
तु ॥ विहस्तैमकहस्तैश्चार्द्धपोष्टिकैर्मगैर्विशाल्युल्लमर्द्धवाग्नार्द्धचमात्रसेव्युक्तवर्त्तुवत्तु
स्तोपीर्गुपोष्टिकं तथा मात्र सप्तर्द्धवर्त्तुवत्तु ॥ ४॥ नृपाद्यादिकं प्राच्य सर्ववत्तु विधिकं मे ॥ ३॥
थासत्र सप्तगिलेगा नोदविष्टपक्षे मात्र सप्तकस्य कथा वा षड्पादोक्तस्य कथा प्राकं वग्या कृष्टे च इत्यलैरा-

३२

॥ ३॥

त्यादिकि सप्तकर्म वा मन्त्र पञ्चरात्रे ॥ ५॥ सप्तर्ष्यादिकि सप्तर्ष्या वा मन्त्र यागपत्रिका ॥ ६॥ क
स्यादिकि सप्तर्षिर्ह वा मन्त्र पञ्चरात्रे ॥ ७॥ सप्तर्ष्यादिकि सप्तर्षिर्ह वा मन्त्र पञ्चरात्रे ॥ ८॥
त्यादिकि सप्तर्षिर्ह वा मन्त्र पञ्चरात्रे ॥ ९॥ सप्तर्ष्यादिकि सप्तर्षिर्ह वा मन्त्र पञ्चरात्रे ॥ १०॥
पञ्चर्षिर्ह वा मन्त्र पञ्चरात्रे ॥ ११॥ सप्तर्ष्यादिकि सप्तर्षिर्ह वा मन्त्र पञ्चरात्रे ॥ १२॥
सप्तर्षिर्ह वा मन्त्र पञ्चरात्रे ॥ १३॥ सप्तर्ष्यादिकि सप्तर्षिर्ह वा मन्त्र पञ्चरात्रे ॥ १४॥

॥ हव ॥

पृथ्वीं नुदुमिलालाभा वलिचन्द्रमनिपुलावचभुलोचनरुश्यामाशान्विती कर्परा मता
॥ वृक्षीं डोपे नुदुदोश्चवे वल्लो विनायका ४ नैम किर्वे मविमिच एमेया दीती कुविष्टदी
वालकै रूपयितो दुरुतावर्क पशुरु क्रितशा ने रासापद्ध मर्तु गा कालिक मचन्ते
॥ मीती वग्धक व मर्तु इष्टा सा नैर्त यथा रातागा क्रपक व मर्तु द वास विमर्त ॥
दहं कथयाम्य स गृह्य विष्टु र्वद द रावृष्ट पूर्वो धिस खप मया तान्य पु मर्तु न स मर्तु

५२

॥ ५३ ॥

स्य यद्गुणं वज्रहं त्वनयत्कर्म ॥ विहसि स ग्रीद विउप राधा त्वयि कथं गाम सु ले वरु पि
॥ दुष्टो लाला कला लिने ॥ नृपिष्टा वज्र गरु सदा दुं को कम्प मिला रुमी ॥ अय न जा
मनसा नदी र्घ नाद नवान् ॥ हव ज या ग म य क न क य न स र्वे ग पि त शा ल क जा ध न
या गा सा रा व क र्म क रा ल्य सा र ह का व व ज या ग त वि म क न व ग ल्या द द ता मा दि स र्वे वा ह
द्विन्दु विहसि गी प र्वा द द द ता य कि पि ल र्द क म व र्म व र च दु वि म ति त जा य त द न पा

॥ हव ॥

विजयं कलमी गताद या लवा गै सवस्मि नी पयः प्रताद र दिवी मालि जे ४ प वि प वि री रा
किं वरू ना पु ला ध न य था त व स्य सै ग ह म सु ल वि वि स थ क रू वी ॥ म सु ल च पु व र वा वि श्या
स शो महा स रू ४ द्वा द श ॥ दि द्वि व रू च हो व स पु व र पि ता शे ज न ती र गि ती च व इ हि ता रा ता त पि
का ॥ मा तु व स्य क था रा या ना रू गी ती च व स का र पि रु रू गि ती त था च व ल रू वि श्या ४ पु की रू ता श
ना सी प रू य शी गी गा दो लो ग स च स नै ४ क र्प य च पि व रू न त म सु ल पा क न श ना सी पा व या

३१

आ री ल य सि द्वि स वा प्र या ना स द न ग पु पा त वी रू क रू य च र सा लि जै ती च वि व सि का क रू ता र
गै च म य स रू रू ४ ना लि श्वा त व ली गी य त न रू य क प री ॥ श्री की ज कि य रू त न व ल क रू
ल या रा त ४ प श्वा द्वि ती य प रू स सि य क पु व र य त रू द्वि पु रू श व स मु स प श्वा त स सु ल द रू
नी ॥ न सि ध रू दी य त न नि मी र थ वि क रू त ग रू ग य था क थि ता त्वा ती प का ना च र्प य दि पु रू
द रू ४ म्भु कि प जा य था रू वा ता पा गु न यै स सि य क ४ क रू त व रू द य रू व वि व सा दि य रू सा क

॥ हव ॥

है ॥ एतत्पितृ सर्वतनुषु न कर्म न पुकारि ॥ पृच्छते तनुदेवी च वज्रपुष्पापयागतशा कुरुते
कोटि सैव कथयस्व महापुत्रा ॥ हव वा त्ना हव वा त्ना षीत न कुरुते मय्युहित उरुवत उ निवृत्ति
४८ कसोपवम महासुहृत्त उ पयस्य उ मया न ॥ स्वसंयत यथा ॥ सनु हव वा तासिका चया ॥
तापीपुपी उ यथा गिरी सा एतत्तु द्वयं ॥ पश्चात्त्य शत शतैः कमा विसृजते यथा ॥ किमप्य
त्यशत तनु मकस्य स्वप्रेयथा ॥ पत्रमा कर्कस ॥ विप्रमस्य मृत्वा भूतनु हवर्क ॥

३२

४३॥

मिथी हवजगत्तु हवजात्यद्वयं ४८ पश्चात्तु सपटल ४८ ॥ पश्चात्तु सपटल ४८ ॥ १६ ॥ ॥ देवी
वेता नृमालिगि किं हव वा लैक कालकं ॥ मभर्तुं कुरु गृहं कला सुवृषा तत्र तासिका ॥ दंभं तना
मापीश्वरुं कुरु तान्त्रिकं ॥ संपूर्णं सौम्या सा साय पश्चात्तु पुकारि ॥ गुर्वी वार्या सुदव
त्यत नार्थं वक्रिया हव ॥ इति पश्चात्तु वसया ४८ कुलैः वार्या वक्तुं पंचकीयिका ॥ चचक
यासिर्वैद्यक मर्दोर्हि जिरु ४८ मप्रली ॥ पश्चात्तु सपटल ४८ गरीरं मर्दिता सदा ॥ पृहत्तक

॥ हव ॥

१ कृत्वा दत्ते १ संपद्यथा धर्मं ॥ यच्छुभं तत्तु सा दवी हवर्जं सहजं पिने कतं च न विधानेन कया कि
यया तथैवापुनः ॥ हवर्जस्य पटं कार्यं कथयस्व महामुखा ॥ रुगवान्नाह ॥ समपि विरुक्तं न हस्ताय
काना पिसमपि ना ॥ लिखितं च पटं धार्यं नरकं ॥ ४ पचश्चर्कं के १ सा पके ४ साय कर्त्री च लिखितो
यं पटलं गुर्वं ॥ स पुनैव यया कार्यं करुर्वै च पटं यया कया पिसमपि न्या ॥ १ समयो विज्ञाते याग
तं १ न ॥ इति वै सदैव सा कृत्वा विजितं गृह ॥ मन्त्रा न कुर्वन् विरुक्तं किंचित् सद न पात न १ न ॥

५३

॥ ज ॥

निर्यसक आवात ग्रीरुयसु था पत १ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
॥ न ॥ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
॥ न ॥ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
॥ न ॥ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ हं व ॥

हं ॥ रुद्रपुत्रं लिखितं स यो द्वा दशांशुतपस्तु कं ॥ महासधमसिंहं कृत्वा लेश्वर्या मानवाश्चिह्निष्य
स्तु कथं पटस्त्रे वयं दिवा इव पश्यति ॥ वृद्धं नमिने सिद्धिं श्रुत्वा नृवापव लोकं ॥ गमच व
॥ संप्रदायय कस्य दर्शनं वरकदा विहगा ॥ गमपि नवी कथं कथं कथं कथं ॥ गमच व ॥ रुद्रगिलिगी पुनि
ष्टाये वच्यं यि त्वा मर्द्धं मर्द्धं ॥ महासुखं समासा श्रवडी ला जत मादि ला गम मृदु देवी विमा ला
की ला जत गस म सुखं गय रुद्र कं रुद्रे सिद्धिं श्रुत्वा सर्व का मा र्थ साधकी ॥ गम गम न गि त्रि कं कं वा म

॥ ५ ॥

नृपस्य प्रगता ॥ अथ वा विजतं श्रुत्वा कं कं दं ला जत मा च व गम कल्यय दा सते रुद्र न वा र्थी
वत्र पि क्षी ॥ अथ वा व्या यु च मी च रुद्र म गम न कर्णं ॥ मा अ हं वे ज न पा सा या गि नी नी त का त्प म
ह ॥ रुद्र न हा ला य था प र्व दि क्षा सु वि दि क्षा सु च ॥ व्या यु च मी पे त्रि डु डी त स म य स मा ल ती च
ने ग रु कं च रुद्र प त रुद्रा ज गालि पु य त रुद्रा रुद्रा रुद्रा प त रुद्र प य रुद्र रुद्र मा रुद्र ॥ यदि वा
मा ता रु गि नी ला ग न यी व र्व रुद्रा ॥ पञ्च ये त्रि रुद्रे ता सा सि ध क ग स म सु ख ॥ न क रुद्र रुद्र म हा न रुद्र

॥ हं व ॥

कौदिवां मदतपत्रिहं ॥ गुदधयामहा एव न्ययि स्वाख्यं विवत ॥ गृहीयात्प्रहस्तनदयारु
नेव पासिनाम हर्म ह ४ पुसा मय कर्च कि त्त साधका ४ ॥ ॥ वं कि श्री हवे ज रुनु लो कृत य
हल सफ म ४ म ह्य द स म व्या य ४ ॥ १८ ॥ ॥ त्तु पृष्ठु कि या गित्य स ह म ज दु की ह मी से व
ल वा य व प स क थ य ख स र्वे द द ॥ त्तु वा न्ना ह ॥ ना कि दी र्घा ता कि ज स्वा त व कृ कृ त ए गो त्रिका ॥ प
प्र पृ नि रु का रा श स कृ ण ४ स र्ग व र्क पु स्त र्च स ग धि ४ स्ता स्ता गा ता हि स म पु र्ण य प्र व न्दी व न्

३३

॥ ५ ॥

गं वे सा त्प्र मि वा च न्ना क र्प्य र सि कृ या त्ता ४ स र्ग व ल कृ य द्ध ४ उ त्ता ल स र्ग व द्ध र्च वा य सा गु द म
त्रि हं ॥ धी रा न्न च र्च लो च व पि य वा दि म ना य मा ॥ स क र्मा पि व लो म व्या प्रो कृ त ४ प मी ती म ना र ती च
सा ध र्ग व सि डि ४ स ह ज्ञा त न्द्र पि ती ॥ अ था ह नै रा ला यो गि ती रु गा वे न्यु सि वा न्नी की ह र्ण क र्ह वी ॥ रु
ग वा न्ना ह ॥ क र्ण ज मा व ज मा दी स म यी ह व ज द द क ४ रु पा वा न गु व रु क र्च रु वे र्ण ज न्न २ ति व ज
य स्या त्प्र स त्या सि र्ग मी य व र्म पा ० क ४ या पि ह्म स मा हा त्रि हं व र्ण ज न्न २ ति ॥ तं पृष्ठु र्गु सा

॥हव॥

दवीर्ण्यवचनमववीह॥ इहो नाइइरा४सखा विसर्ययाकिकेतहि॥ रुगवान्नाह॥ पाषध दीय
तपुधर्मदत्तमिआपददठोवेलाप्येकददलासुजाकवेपतकथा॥ योगमवावेतगठपश्चक
दत्तसखामकदिखात॥ सर्वमकुनयेलातातदत्तहवजमावहृत्॥ एकीयासादवेसिष्यसिष्य
तनाउसंशय४॥ ॥००॥ तिथीहवजककुचिभयपटलातामष्टम४३नविस्तकिकमव्याय४॥
१२॥ गजथात४सेपवओमिसेयेगजातलकनविज्ञातमाजुससाधक४सिद्धिमाप्रयात्॥ सा

३३

॥५॥

अस्यताहिमलहुहकतायादयदुति॥ हवकपुतिर्यासातनारखानकवचनसा॥ लावतामाजुकने
वडापितेव्यहकुवे॥ मोत्रसेकियककपयाअवपित्वागुयोमनो॥ मासनायापकादीचपुन
कडस्यजासकमयकुदस्यथत्रयमखामर्त्यरावयेकवकमदसकवेवकमपयकसमठ
जीगहोगार्गसर्विआयात्युविभक्तिवक्रिद्विपीसीराहृदयहतासनेवीडंइष्टमाप्रयहृद
सात॥ अस्तिनगुनहातवीमडावचक्रियानच॥ यथिहसिडंमहातुंआनमाजुमसिष्यति

॥ हं व ॥

॥ ग्रहस्य पुनर्मे वरुव शुभं सुद वी व मानेन ॥ ह व सु सा धु ने प्र म म वि क ल्यं सिद्धि सा य क ॥ प स्य द वी म हा प्र
लं काला मा स्म द प्र व प ४ म या गा १ सा द वि छ न वि ४ स नु ति सा य क ४ म द सै सा प्र क र्त्त र्त्त प चर का म पु र स र्य म
म वि भू छ वि ष ती या ति वि ४ ४ पी य प व ह वे न ॥ सै सा प्र ह न का का र्त्त ज ग इ ल्य व र्त्त प र्त्त ॥ य न नू प न
सै र्त्त म द ह व सि मृ द्य ती ॥ कृ प या लो च न प्र क र्त्त कृ ४ ४ म र्त्त वि रु त ४ सै ग ह व कृ च कृ ४ त च त्वा
व अ न ४ ४ स ॥ १ ॥ मृ द्य ती वि सा कृ ४ ४ मृ द्य ती पा द ४ ४ रु ४ ४ मृ द्य न प र्त्त व ४ ४ स ४ ४ कृ ४ ४ र्त्त वि

३०

॥ ५ ॥

आर्य समाज	K. Y	3800
-----------	------	------